May I have your Attention Please..!

Please... समय रहते जाग जाओ...

15-05-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

“मीठे बच्चे - यह दुनिया कब्रिस्तान होने वाली है इसलिए इससे दिल नहीं लगाओ, परिस्तान को याद करो"

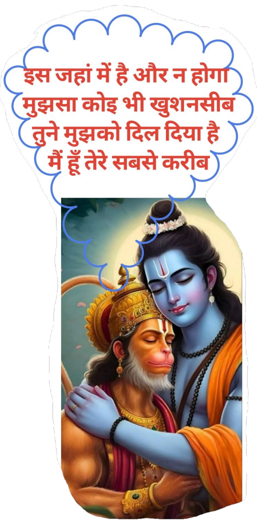

प्रश्नः तुम गरीब बच्चों जैसा खुशनसीब दुनिया में कोई भी नहीं, क्यों?

चढ़ाओ नशा...

How lucky and Great we are...!

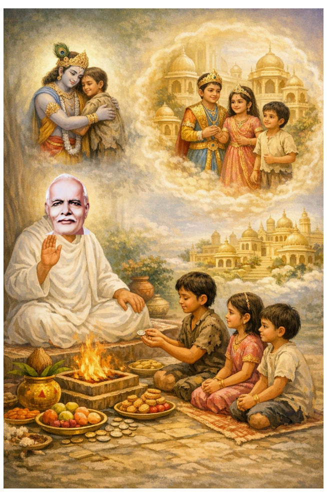

उत्तरः क्योंकि तुम गरीब बच्चे ही डायरेक्ट उस बाप के बने हो जिससे सद्गति का वर्सा मिलता है। गरीब बच्चे ही पढ़ते हैं। साहूकार यदि थोड़ा पढ़ेंगे भी, तो उन्हें बाप की याद मुश्किल से रहेगी। तुम्हें तो अन्त में बाप के सिवाए और कुछ भी याद नहीं आयेगा इसलिए तुम सबसे खुशनसीब हो।

गीत:-दिल का सहारा टूट न जाये.... Click

Fear of आत्मा।
Described in this Song

नजर आती है कुछ बिगड़ी हुई
हालत जमाने की
कहीं हमको ना मिल जाये
सजा दिल के लगाने की

दिल का सहारा टूट ना जाये
बन के नसीबा फूट ना जाये
बन के नसीबा फूट ना जाये
दिल का सहारा टूट ना जाये

बदला हुआ है रंग जहाँ का
रंग जहाँ का
बदला हुआ है रंग जहाँ का
हाथ से दामन छूट ना जाये
दिल का सहारा टूट ना जाये

है ये जमाना प्यार का दुश्मन
प्यार का दुश्मन
है ये जमाना प्यार का दुश्मन
मेरी खुशी को लूट ना जाये
दिल का सहारा टूट ना जाये

हमने किसी से प्यार किया है
प्यार किया है
हमने किसी से प्यार किया है
हमसे दुनिया रुठ ना जाये
दिल का सहारा टूट ना जाये

Poin T M.imp.

15-05-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

ओम् शान्ति। बच्चों प्रति बाप समझा रहे हैं और बच्चे समझ रहे हैं कि बरोबर यह जमाना अब कब्रिस्तान बनने वाला है। पहले यह जमाना परिस्तान था, अब पुराना हो गया है इसलिए इनको कब्रिस्तान कहते हैं। सबको कब्रदाखिल होना है। पुरानी चीज़ कब्रदाखिल होती है अर्थात् मिट्टी में मिल जाती है। यह भी सिर्फ तुम बच्चे ही जानते हो, दुनिया नहीं जानती। कुछ विलायत वालों को मालूम होता है कि कब्रदाखिल होने का समय दिखता है। तुम बच्चे भी जानते हो कि परिस्तान स्थापन करने वाला हमारा बाबा फिर से आया हुआ है। बच्चे यह भी समझते हैं, अगर इस कब्रिस्तान से दिल लगाई तो घाटा पड़ जायेगा। अभी तुम बेहद के बाप से बेहद सुख का वर्सा ले रहे हो, सो भी कल्प पहले मुआफिक। यह तुम बच्चों की बुद्धि में हर कदम रहना चाहिए तो यही मनमनाभव है। बाप की याद में रहने से ही परिस्तानी बनेंगे। भारत परिस्तान था और खण्ड परिस्तान नहीं बनते हैं। यह है माया रावण का पॉम्प। यह थोड़ा समय चलने वाला है। यह है झूठा

चढ़ाओ नशा...

How lucky and Great we are...!

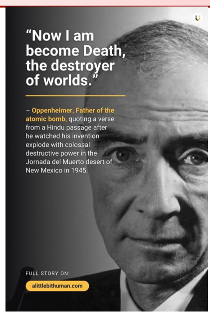

Attention Please..!

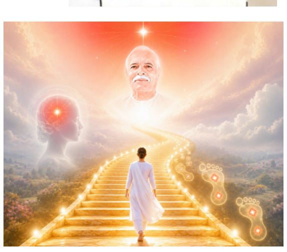

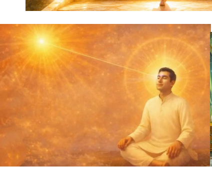

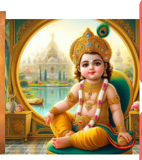

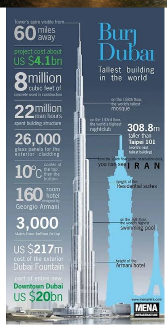

Show of 100 वर्ष

शो। झूठी माया, झूठी काया है ना। यह पिछाड़ी का भभका है। इनको देखकर समझते हैं, स्वर्ग तो अभी है, पहले नर्क था। बड़े-बड़े मकान बनाते रहते हैं। यह 100 वर्ष का शो है। टेलीफोन, बिजली, एरोप्लेन आदि यह सब 100 वर्ष के अन्दर बनते हैं। कितना शो है इसलिए समझते हैं स्वर्ग तो अभी है। देहली पुरानी क्या थी? अभी नई देहली कैसे अच्छी बनी है। नाम ही रखा है न्यु देहली। बापू जी चाहते थे नई दुनिया रामराज्य हो, परिस्तान हो। यह तो टैम्परेरी पॉम्प है। कितने बड़े-बड़े मकान, फाउन्टेन आदि बनाते हैं, इनको आर्टीफीशियल स्वर्ग कहा जाता है, अल्प-काल के लिए। तुम जानते हो इनका नाम कोई स्वर्ग नहीं है। इनका नाम नर्क है। नर्क का भी एक शो है। यह है अल्प-काल का शो। यह अभी गया कि गया।

आर्टिफिशल स्वर्ग

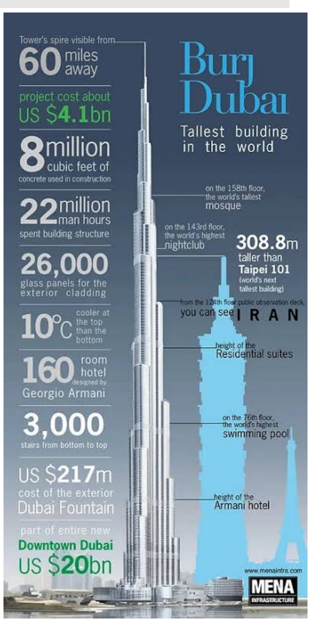

अब बाप बच्चों को कहते हैं - एक तो शान्तिधाम को याद करो। सब मनुष्य मात्र शान्ति को ढूँढ़ते

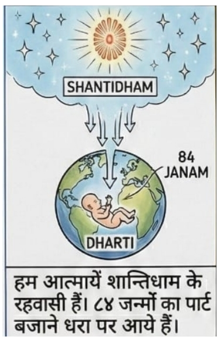

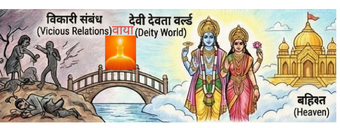

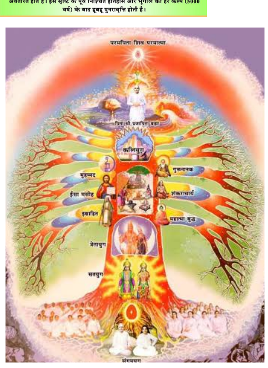

रहते हैं, कहाँ से शान्ति मिलेगी? अब यह सवाल तो सारी दुनिया का है कि दुनिया में शान्ति कैसे हो? मनुष्यों को यह पता नहीं कि हम सब वास्तव में शान्तिधाम के रहने वाले हैं। हम आत्मायें शान्तिधाम में शान्त रहती हैं फिर यहाँ आती हैं, पार्ट बजाने।

चढ़ाओ नशा...

सो भी तुम बच्चों को मालूम है। अभी तुम पुरुषार्थ कर रहे हो सुखधाम जाने वाया शान्तिधाम। हर एक की बुद्धि में है हम आत्मायें अभी जायेंगी अपने घर, शान्तिधाम। यहाँ तो शान्ति की बात हो नहीं सकती। यह है ही दु:खधाम। सतयुग पावन दुनिया, कलियुग है पतित दुनिया। इन बातों की समझ अभी तुम

Thank you so much मेरे मीठे बाबा...

बच्चों को आई है। दुनिया वाले तो कुछ भी नहीं जानते हैं। तुम्हारी बुद्धि में आया है - बेहद का बाप हमको सृष्टि चक्र के आदि-मध्य-अन्त का राज़ समझाते हैं। फिर कैसे धर्म स्थापक आकर धर्म स्थापन करते हैं। अब सृष्टि में कितने अथाह मनुष्य हैं। भारत में भी बहुत हैं, भारत जब स्वर्ग था तब बहुत साहूकार थे और कोई धर्म नहीं था। तुम बच्चों को रोज़ रिफ्रेश किया जाता है। बाप और

15-05-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

वर्से को याद करो। भक्ति मार्ग में भी यह चला आता है। हमेशा अंगुली दिखाते हैं कि परमात्मा को याद करो। परमात्मा अथवा अल्लाह वहाँ है। परन्तु सिर्फ ऐसे ही याद करने से कुछ होता थोड़ेही है। उनको यह भी पता नहीं है कि याद से क्या फायदा होगा! उनके साथ हमारा क्या सम्बन्ध है? जानते ही नहीं। दु:ख के समय पुकारते हैं - हे राम... आत्मा याद करती है। परन्तु उनको यह पता नहीं है कि सुख-शान्ति किसको कहा जाता है। तुम्हारी बुद्धि में आता है कि हम सब एक बाप की सन्तान हैं तो फिर दु:ख क्यों होना चाहिए?

बेहद के बाप से सदा सुख का वर्सा मिलना चाहिए। यह भी चित्र में क्लीयर है। भगवान है ही स्वर्ग की स्थापना करने वाला, हेविनली गॉड फादर। वह आते भी भारत में ही हैं। परन्तु यह कोई समझते नहीं हैं। देवी देवता धर्म की स्थापना जरूर संगम पर ही होगी, सतयुग में कैसे होगी!

Simple Logic

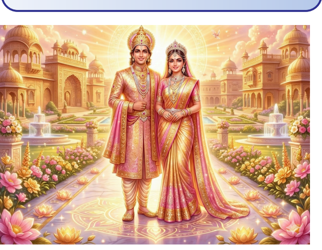

परन्तु यह बातें दूसरे धर्म वाले जानते नहीं। यह तो बाप ही नॉलेजफुल है, समझाते हैं - आदि सनातन देवी देवता धर्म कैसे स्थापन हुआ। सतयुग की

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

15-05-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

आयु लाखों वर्ष कहने से बहुत दूर कर देते हैं। तुम बच्चों को चित्रों पर ही समझाना है। भारत में इन लक्ष्मी-नारायण का राज्य था। इन्होंने कैसे, कब यह राज्य पाया, यह नहीं जानते। सिर्फ कहते हैं - यह सतयुग के मालिक थे। उनके आगे जाकर भीख माँगते हैं तो अल्पकाल के लिए कुछ न कुछ मिल जाता है। कोई दान-पुण्य करते हैं, उनको भी अल्पकाल के लिए फल मिल जाता है। गरीब पंचायत के मुखी को भी इतनी ही खुशी रहती है, जितनी साहूकार मुखी को। गरीब भी अपने को सुखी समझते हैं। बॉम्बे में देखो, गरीब लोग कैसे-कैसे स्थानों पर रहते हैं। तुम बच्चे अभी समझते हो - भल करोड़पति हैं परन्तु कितने दु:खी हैं।

यो यो यां यां तनुं भक्तः श्रद्धयार्चितुमिच्छति।
तस्य तस्याचलां श्रद्धां तामेव विदधाम्यहम्॥
जो-जो सकाम भक्त जिस-जिस देवताके स्वरूपको श्रद्धासे पूजना चाहता है, उस-उस भक्तकी श्रद्धाको मैं उसी देवताके प्रति स्थिर करता हूँ॥ २१॥
स तया श्रद्धया युक्तस्तस्याराधनमीहते।
लभते च ततः कामान्मयैव विहितान्हि तान्॥
वह पुरुष उस श्रद्धासे युक्त होकर उस देवताका पूजन करता है और उस देवतासे मेरे द्वारा ही विधान किये हुए उन इच्छित भोगोंको निःसन्देह प्राप्त करता है॥ २२॥ The ultimate source
अन्तवत्तु फलं तेषां तद्भवत्यल्पमेधसाम्।
देवान्देवयजो यान्ति मद्भक्ता यान्ति मामपि॥
* अध्याय ७ * १०५
समझा?
परन्तु उन अल्प बुद्धिवालोंका वह फल नाशवान् है तथा वे देवताओंको पूजनेवाले देवताओंको प्राप्त होते हैं और मेरे भक्त चाहे जैसे ही भजें, अन्तमें वे मुझको ही प्राप्त होते हैं॥ २३॥

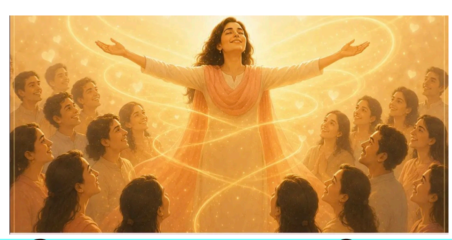

अभी तुम कहेंगे हमारे जैसा खुशनसीब और कोई नहीं। हम डायरेक्ट बाप के बने हैं, जिससे सद्गति का वर्सा मिलता है। बड़े-बड़े आदमी कभी भी ऊंच पद पा न सकें। जो गरीब हैं, वह साहूकार बन

जिसको पाने के लिए लोग अपना गला भी उतार कर रखने को तैयार है..

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

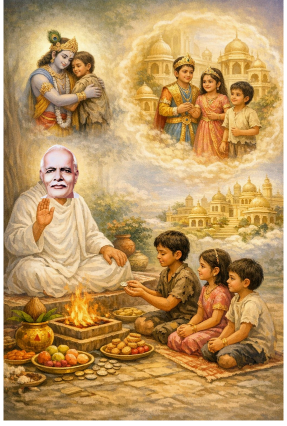

जाते हैं। पढ़ते तुम हो, वह तो अनपढ़ हैं। करके थोड़ा पढ़ेंगे भी तो भी बाप की याद में रह नहीं सकते। अन्त में तुमको सिवाए बाप के और कुछ भी याद नहीं रहना है। जानते हो यह सब कब्रिस्तान होना है। बुद्धि में रहना चाहिए "यह जो हम धन्धा आदि करते हैं, थोड़े समय के लिए है।" धनवान लोग धर्मशालायें आदि बनाते हैं। वह कोई धन्धे के लिए नहीं बनाते हैं। जहाँ तीर्थ वहाँ धर्मशालायें नहीं हो तो कहाँ रहें, इसलिए साहूकार लोग धर्मशालायें बनाते हैं। ऐसे नहीं कि व्यापारी लोग आकर व्यापार करें। धर्मशाला तीर्थ स्थानों पर बनाई जाती हैं। अब तुम्हारा सेन्टर बड़े ते बड़ा तीर्थ है। तुम्हारे सेन्टर्स जहाँ-जहाँ हैं वे बड़े से बड़े तीर्थ हैं, जहाँ से मनुष्य को सुख-शान्ति मिलती है। तुम्हारी यह गीता पाठशाला बड़ी है। यह सोर्स आफ इनकम है, इससे तुम्हारी बहुत आमदनी होती है। तुम बच्चों के लिए यह भी धर्मशाला है। बड़े से बड़ा तीर्थ है। तुम बेहद के बाप से बेहद का वर्सा लेते हो। इस जैसा बड़े से बड़ा तीर्थ कोई होता नहीं। उन तीर्थों पर जाने से तो तुमको कुछ

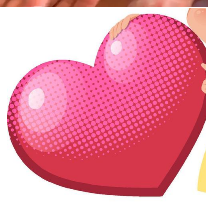

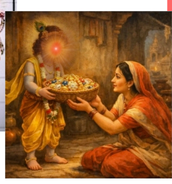

भी मिलता नहीं। यह भी तुम समझते हो। भक्त लोग बड़े प्रेम से मन्दिर आदि में चरणामृत लेते हैं। समझते हैं उनसे हमारा हृदय पवित्र हो जायेगा। परन्तु वह तो पानी है। यहाँ तो बाप कहते हैं - मुझे याद करो तो वर्सा मिलेगा। अभी बेहद के बाप से तुमको अविनाशी ज्ञान रत्नों का खज़ाना मिलता है। अक्सर करके शंकर के पास जाते हैं, समझते हैं अमरनाथ ने पार्वती को कथा सुनाई, तब कहते हैं भर दे झोली... तुम अविनाशी ज्ञान रत्नों से झोली भरते हो। बाकी अमरनाथ कोई एक को थोड़ेही बैठकर कथा सुनायेगा। जरूर बहुत होंगे और वह भी मृत्युलोक में ही होंगे। सूक्ष्मवतन में तो कथा सुनाने की दरकार ही नहीं। अनेक तीर्थ बनाये हैं। साधू-सन्त, महात्मा आदि ढेर जाते हैं। अमरनाथ पर लाखों आदमी जाते हैं। कुम्भ के मेले पर गंगा स्नान करने सबसे जास्ती जाते हैं। समझते हैं, हम पावन बनेंगे। वास्तव में कुम्भ का मेला यह है। वह मेले तो जन्म-जन्मान्तर करते आये। परन्तु बाप कहते हैं - इससे वापिस अपने घर कोई भी जा नहीं सकते क्योंकि जब आत्मा

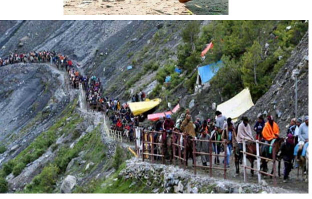

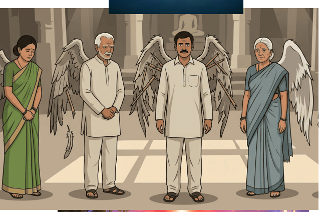
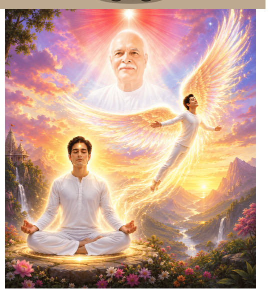

पवित्र बने तब जा सके। परन्तु अपवित्र होने के कारण सबके पंख टूटे हुए हैं। आत्मा को पंख मिले हैं, योग में रहने से आत्मा सबसे तीखी (Fastest) उड़ती है। कोई का हिसाब-किताब लन्दन में, अमेरिका में होगा तो झट उड़ेंगे। वहाँ सेकण्ड में पहुँच जाते हैं। लेकिन मुक्तिधाम में तो जब कर्मातीत हो तब जा सकें, तब तक यहाँ ही जन्म-मरण में आते हैं। जैसे ड्रामा टिक-टिक हो चलता है। आत्मा भी ऐसे है, टिक हुई यह गई। इन जैसी तीखी (Fast) और कोई चीज़ होती नहीं। ढेर की ढेर सब आत्मायें मूलवतन में जाने वाली हैं। आत्मा को कहाँ का कहाँ पहुँचने में देरी नहीं लगती है। मनुष्य यह बातें समझते नहीं। तुम बच्चों की बुद्धि में आता है कि नई दुनिया में जरूर थोड़ी आत्मायें होंगी और वहाँ बहुत सुखी होंगी। वही आत्मायें अब 84 जन्म भोग बहुत दु:खी हुई हैं। तुमको सारे चक्र का मालूम पड़ा है। तुम्हारी बुद्धि चलती है और कोई मनुष्य मात्र की बुद्धि नहीं चलती। प्रजापिता ब्रह्मा भी गाया हुआ है। कल्प पहले भी तुम ऐसे ही ब्रह्माकुमार-कुमारी बने थे। तुम जानते हो कि हम प्रजापिता ब्रह्मा के

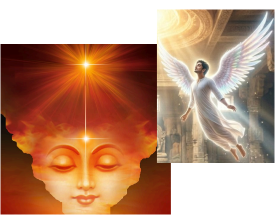

चढ़ाओ नशा...

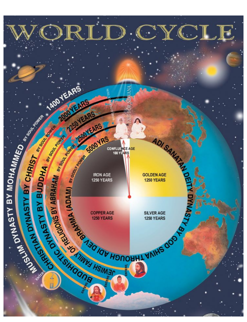

How lucky and Great we are...!

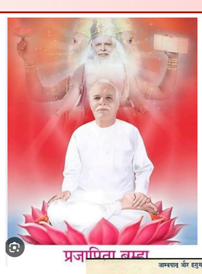

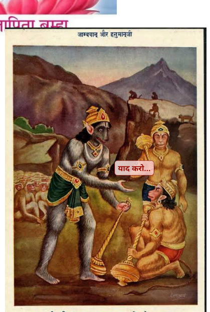

वाह रे मैं...

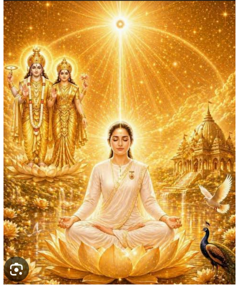

15-05-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

बच्चे हैं। हमारे द्वारा बाबा स्वर्ग की स्थापना करा रहे हैं। जब नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार लायक बन जायेंगे तो फिर पुरानी दुनिया का विनाश होगा। त्रिमूर्ति भी यहाँ ही गाया हुआ है। त्रिमूर्ति का चित्र भी रखते हैं। उसमें शिव को दिखाते नहीं। कहा भी जाता है - ब्रह्मा द्वारा स्थापना, कौन कराते हैं? शिवबाबा। विष्णु द्वारा पालना।

very
Coming soon...
Are you ready?

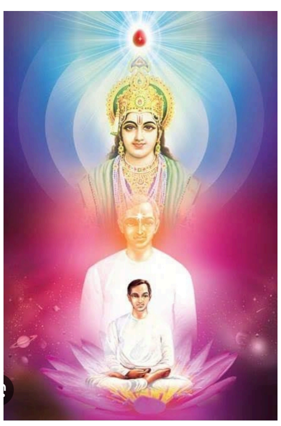

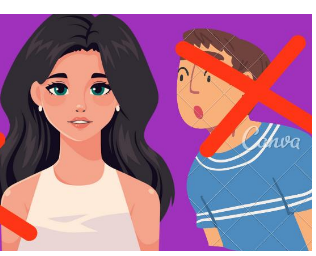

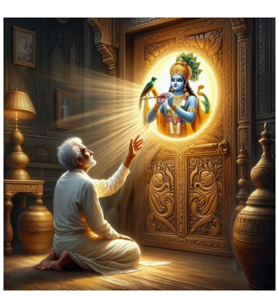

तुम ब्राह्मण अभी लायक बन रहे हो, देवता बनने के लिए। अभी तुम वह पार्ट बजा रहे हो। कल्प के बाद फिर बजायेंगे। तुम पवित्र बनते हो। कहते हो - बाबा का फरमान है काम रूपी शत्रु को जीतो, मामेकम् याद करो। बहुत सहज है। भक्ति मार्ग में तुम बच्चों ने बहुत दु:ख देखे हैं। करके थोड़ा सुख है तो भी अल्पकाल के लिए। भक्ति में साक्षात्कार होता है। सो भी अल्पकाल के लिए तुम्हारी आश पूरी होती है, Words of world Almighty यह साक्षात्कार होता है - वह भी मैं कराता हूँ। ड्रामा में नूँध है। जो पास्ट हुआ सेकेण्ड

How it happens...?

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

imp to understand

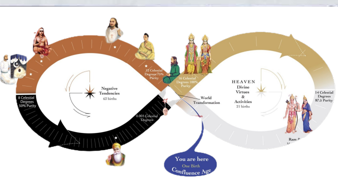

बाई सेकेण्ड, ड्रामा शूट किया हुआ है। ऐसे नहीं कहते हैं - अब शूट हुआ। नहीं, यह तो अनादि बना बनाया ड्रामा है। जितने भी एक्टर्स हैं - सबका पार्ट अविनाशी है। मोक्ष को कोई नहीं पाते हैं। संन्यासी लोग कहते हैं - हम लीन हो जाते हैं। बाप समझाते हैं तुम अविनाशी आत्मा हो। आत्मा बिन्दी है, इतनी छोटी सी बिन्दी में 84 जन्मों का पार्ट नूँधा हुआ है। यह चक्र चलता ही रहता है। जो पहले-पहले पार्ट बजाने आते हैं, वही 84 जन्म लेते हैं। सब तो ले न सकें। तुम्हारे सिवाए और कोई की बुद्धि में यह नॉलेज नहीं है। ज्ञान का सागर एक ही बाप है। तुम जानते हो हम बाप से वर्सा ले रहे हैं। बाप हमको पतित से पावन बनाते हैं। सुख और शान्ति का वर्सा देते हैं। सतयुग में दु:ख का नाम-निशान नहीं होता। बाप कहते हैं - आयुश्वान भव, धनवान भव... निवृत्ति मार्ग वाले ऐसी आशीर्वाद दे न सकें। तुम बच्चों को बाप से वर्सा मिल रहा है। सतयुग त्रेता है सुखधाम। फिर दु:ख कैसे होता है, यह भी कोई नहीं जानते। देवतायें वाम मार्ग में कैसे जाते हैं, वह निशानियाँ हैं। जगन्नाथ पुरी में

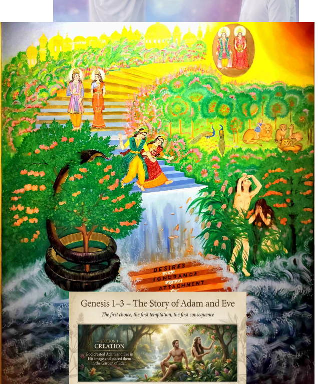

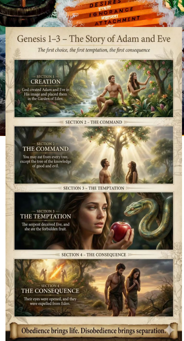

Also At Khajuraho Temples M.P.

15-05-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

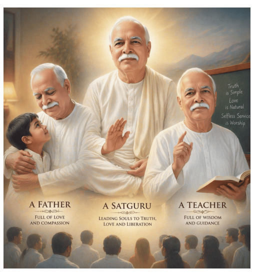

देवताओं के चित्र, ताज आदि पहने हुए दिखाते हैं फिर गन्दे चित्र भी बनाये हैं इसलिए उनकी मूर्ति भी काली रखी है, जिससे सिद्ध होता है देवतायें वाम मार्ग में जाते हैं तो अन्त में बिल्कुल काले बन पड़ते हैं। अभी तुम जानते हो, भारत कितना सुन्दर था फिर तमोप्रधान बनना ही है - ड्रामा प्लैन अनुसार। अभी संगम पर तुमको यह नॉलेज है। बाप है नॉलेजफुल। तुम्हारा एक ही बाप, टीचर, गुरू तीनों है। यह सदैव बुद्धि में रहे, शिवबाबा हमको पढ़ाते हैं। यह बेहद की पढ़ाई है, जिससे तुम नॉलेजफुल बन गये हो। तुम सब कुछ जानते हो। वह कहते हैं - सर्वव्यापी है, तुम कहते हो वह पतित-पावन है। कितना रात-दिन का फ़र्क है। अभी तुम मास्टर नॉलेजफुल बने हो, नम्बरवार। जो बाप के पास है वो तुमको सिखाते हैं। तुम भी सबको यह बताते हो, बाप को याद करो तो 21 जन्मों के लिए वर्सा मिलेगा। अच्छा!

How lucky and Great we are...!

मनुष्याणां सहस्त्रेषु कश्चिद्यतति सिद्धये।
यततामपि सिद्धानां कश्चिन्मां वेत्ति तत्त्वतः ॥
हजारों मनुष्योंमें कोई एक मेरी प्राप्तिके लिये यत्न करता है और उन यत्न करनेवाले योगियोंमें भी कोई एक मेरे परायण होकर मुझको तत्त्वसे अर्थात् यथार्थरूपसे जानता है॥ ३ ॥ Adhyay (7)

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

15-05-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

1) स्वयं रिफ्रेश रहकर औरों को रिफ्रेश करने के लिए बाप और वर्से की याद में रहना है और सबको याद दिलाना है।

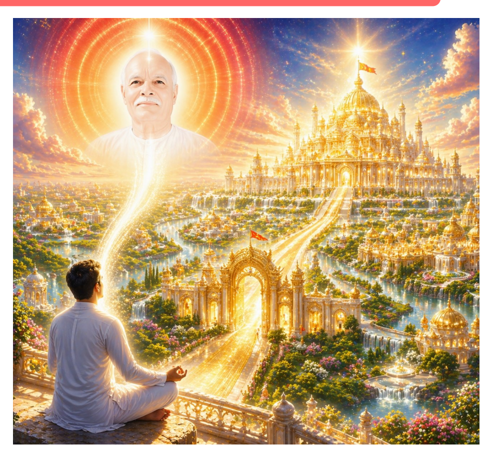

2) इस पुरानी दुनिया से, इस कब्रिस्तान से दिल नहीं लगानी है। शान्तिधाम, सुखधाम को याद करना है। स्वयं को देवता बनने के लायक बनाना है।

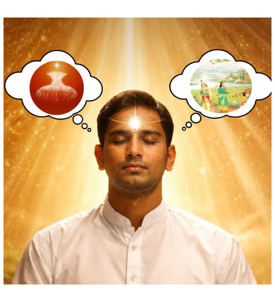

Method/Process/ Instrument

15-05-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

वरदान: ईश्वरीय अथॉरिटी द्वारा संकल्प वा बुद्धि को आर्डर प्रमाण चलाने वाले मास्टर सर्वशक्तिवान भव

Outcome/Output/Result

Final Achievement

जैसे स्थूल हाथ पांव को बिल्कुल सहज रीति जहाँ चाहो वहाँ चलाते हो वा कर्म में लगाते हो

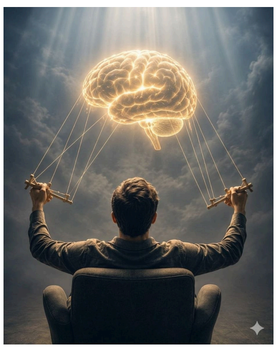

वैसे संकल्प वा बुद्धि को जहाँ लगाने चाहो वहाँ लगा सको - इसे ही कहते हैं ईश्वरीय अथॉरिटी। (Definition of)

जैसे वाणी में आना सहज है वैसे वाणी से परे जाना भी इतना ही सहज हो,

इसी अभ्यास से साक्षात्कार मूर्त बनेंगे।

तो अब इस अभ्यास को सहज और निरन्तर बनाओ तब कहेंगे मास्टर सर्वशक्तिवान।

"I am the master of this universe."
Most Powerful Soul in the universe

स्लोगन:- स्वस्थिति शक्तिशाली हो तो परिस्थिति उसके आगे कुछ भी नहीं है।

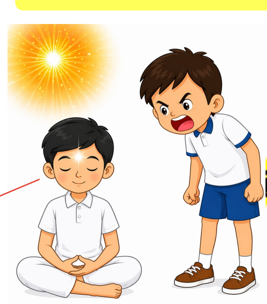

ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

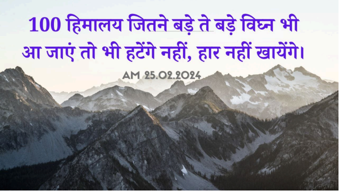

15-05-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

ये अव्यक्त इशारे -

सदा अचल, अडोल, एकरस स्थिति का अनुभव करो

आपके एकरस अचल स्थिति का ही यह अचलघर यादगार है।

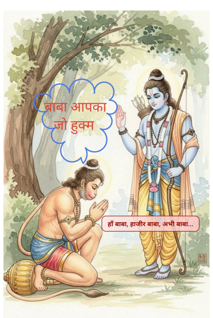

जैसे बापदादा एकरस रहते हैं वैसे बच्चों को भी एकरस रहना है।

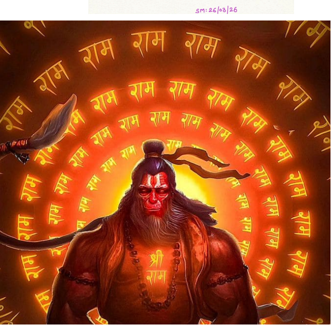

जब एक के ही रस में रहेंगे तो एकरस अवस्था में रहेंगे।

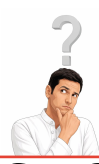

क्यों शब्द की निशानी क्वेश्चन मार्क सभी से टेढ़ा होता है।

जब क्यों, क्या शब्द निकल जायेगा तब ड्रामा की भावी पर एकरस स्थेरियम रह सकेंगे।

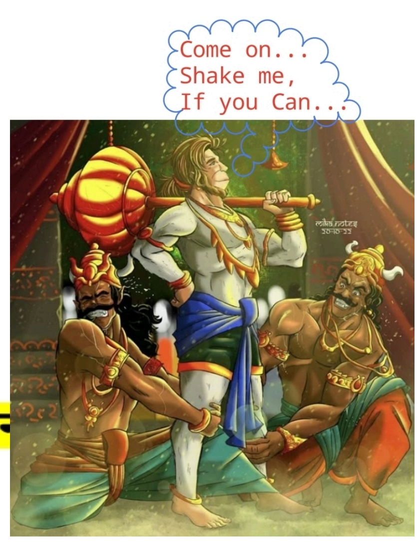

If you wish to stay connected, Here is the link

TELEGRAM

WhatsApp

WORLD WIDE WEB

BKdrluhar

वरदान का फल निकालने के लिए बार-बार वरदान को स्मृति में लाओ। स्मृति स्वरूप के स्थिति में स्थित रहो।

AV: 30/11/2009
Revise: 12/4/26

वरदान slogans April 26 → Click

अव्यक्त इशारे April 26 → Click

मन मत

माया वास्तव में क्या है
और
कैसे माया को समझ सकते हैं व उसे जीत सकते हैं?

माया को अगर सबसे सरल रीति समझना है तो एक कंप्यूटर प्रोग्रामर जो कि कंप्यूटर की कोडिंग करता है जिसे हम software या Application भी कहते है
और उस कोडिंग को चलाने/Run करने के लिए इलेक्ट्रिसिटी चाहिए तो इन तीनों से माया को ऊपर ऊपर से समझ सकते हैं

इस बेहद सृष्टि नाटक में सभी आत्माएं चैतन्य एक्टर्स है मीठे ब्रह्मा बाबा इस सारी सृष्टि का coding(नियम सूची) करने वाले वह प्रोग्रामर है इसी कारण से शास्त्रों में ब्रह्मा बाबा को श्रृष्टि के रचयिता या जगत पिता कहा गया है
साथ ही जो यह कोडिंग होती है उसको चलाने/रन करने के लिए इलेक्ट्रिसिटी अर्थात ऊर्जा चाहिए वह मिलती है शिव बाबा से
और इसी कारण से शिव बाबा हमेशा ही ड्रामा के बाहर रहते हैं जो की ब्रह्मा बाबा के द्वारा किए हुए coding को निरंतर ऊर्जा प्रदान करते रहते हैं और इसीलिए भक्ति मार्ग में शास्त्रों में परमात्मा को सर्वव्यापी कहा है क्योंकि जैसे किसी सॉफ्टवेयर या प्रोग्रामिंग में इलेक्ट्रिसिटी निरन्तर फ्लो होगी तभी वह प्रोग्राम रन करेगा उसी प्रकार यह सारी सृष्टि जो है उसमें शिव बाबा की ऊर्जा प्रवाहित होती है तो इसी कारण से उन्होंने शिव बाबा को सर्वव्यापी कह दिया है
असूल में/एक्चुअल में शिव बाबा सर्वव्यापी नहीं है किंतु उनकी ऊर्जा सारी सृष्टि में व्याप्त/सर्व व्यापी है और निरंतर/constant है

यह माया जो है वह अनंत है
इसको ऐसे समझो:-
1 के बाद 2 आएगा 3 आएगा 4 आएगा उसको आप आगे से आगे लिखते जाओ
लाख, 10 लाख, करोड़, 10 करोड़, अरब, 10 अरब और उससे भी आगे आपको जहां तक गिनती आती हो ......
आपको गिनती आना खत्म हो जाएगा लेकिन नंबर तो उससे भी आगे चलता ही जाएगा अर्थात हमें उस फिगर/अंकों का मूल्य क्या बोलना है वह नहीं मालूम होगा लेकिन वो मूल्य अपना अस्तित्व जरूर रखेगा और वह मूल्य आगे से आगे बढ़ता ही चला जाएगा अनंत तक/♾️ To the Infinity तो इस ही प्रकार से माया भी अनंत है

कोई भी माना कोई भी अपने आप से/अपने बल बूते पर इस माया को पार नहीं कर सकता
वह फिर चाहे मीठे ब्रह्मा बाबा-The creator खुद ही क्यों ना हो ,
जिन्होंने खुद (शिव बाबा के मार्गदर्शन में) इस ड्रामा को रचा - वह खुद ड्रामा में श्री कृष्ण बन कर आने से लेकर 84 वे जन्म में जब तक स्वयं शिव बाबा ने उनके तन में प्रवेश नहीं किया तब तक माया को पार नहीं कर सकते

अब सोचो स्वयं ब्रह्मा बाबा(creator) भी शिव बाबा की श्रीमत के बिना उस अनंत माया को जीत नहीं सकते तो हम किस खेत की मूली है जो दूसरी अपूर्ण ब्राह्मण आत्माओं को फॉलो करके माया को जीत सकेंगे...?

और एक अति सूक्ष्म बात यह है की
जिस प्रकार कोई वस्तु महासागर के बीच में डूबी हुई होती है तो उसके चारों तरफ जैसे पानी उस वस्तु को घेरे हुए होता है उसी प्रकार माया हमारे चारों तरफ सर्वव्यापी है और हम आत्माएं अभी माया के राज्य में रहते हैं तो हमारे हर एक संकल्प भी हमें गिराने और चढ़ाने के निमित बनते हैं अर्थात सारा खेल संकल्पों पर है। Every Single Thought is in Account.
जो संकल्प बाप दादा की श्रीमद् के विपरीत किया तो वह भी आत्मा को गिराने के निमित्त बन जाता है, ऐसा नहीं सोचना है कि एक संकल्प ही तो किया है ना इसमें क्या हुआ, किंतु नहीं। हर एक संकल्प account में लिया जा रहा है और उसके परिणाम(अच्छा व बुरा)भी भोगने की हमे तैयारी रखनी पड़ेगी
और वाणी और कर्म जो है वह तो बहुत बहुत बहुत बड़ी बात हो जाती है जो अगर हमने श्रीमत के विपरीत ऐसा कोई कर्म कर लिया तो वह हमें कर्म बंधनों में ऐसा तो फंसा देते है की जिससे बाहर निकलना भी कई बार मुश्किल हो जाता है(और फिर ज्ञान से भी कई बार आउट हो जाते हैं जो फिर बाहर जाकर बाबा की और इस ईश्वरीय विश्वविद्यालय की बुराई करने में लग जाते हैं जिससे वो और ही नीचे गिर जाते है जिसको बाबा "रसातल में चले जाना" कहते है) इसलिए मीठे बाबा कहते हैं की "सभी सब्जेक्ट में फूल पास होना है तो गंभीरता के गुण को धारण करो(मम्मा के जैसे)" - गंभीरता हमारे लिए एक कवच का काम करती है, जिससे वाचा और कर्मणा में हम बच जाते है और फिर फोकस सिर्फ संकल्पों का रहता है।

एक्चुअल में जो मीठे बाबा ने बताये है वही तीन लोक है इससे ज्यादा कुछ नहीं
लेकिन आप इसको ऐसे समझे कि programmer के पास जो कंप्यूटर है वह अनलिमिटेड स्टोरेज वाला सुपर कंप्यूटर या quantum computer है तो उसमें असंख्य एप्लीकेशन या सॉफ्टवेयर ऐड करके रन करा सकते है (इसलिए मीठे अव्यक्त बापदादा कई बार कहते हैं कि बच्चे आप पुरुषार्थ तो करो बाबा आपके लिए माला में लड़ियां लगा देगा।क्यों कहते हैं ऐसा क्योंकि बाबा के पास unlimited शक्तियां है - वह जो चाहे वह कर सकते हैं)
ठीक वैसे ही इसे भक्ति मार्ग में यह असंख्य ब्रह्मांड(multi verse या कहो कि वर्चुअल वर्ल्ड) दिखाएं है(उदाहरण: आजकल face book वाले Meta Verse create कर रहे है जो virtual world है) वो multi verse और कुछ नहीं है वो सिर्फ मीठे ब्रह्मा बाबा के संकल्प की रचना है जिसमें जो मुक्ति में रहने वाली आत्माएं है उन हर एक के लिए पूरी की पूरी virtual/आभासी दुनिया बना दी है (Real/सच्चा खेल तो इस साकार श्रृष्टि पर ही खेला जाएगा)- आखिर भी ब्रह्मा बाबा है तो सारी सृष्टि के पिता - जगत पिता ही ना, चाहे कोई उन्हें पिता माने या ना माने लेकिन पिता हमेशा पिता ही होता है, जो बच्चों पर हमेशा रहम दिल होता है चाहे वह सपूत हो या कपूत। और इसीलिए शिव बाबा को भक्ति में अनंत कोटि ब्रह्मांड नायक भी कहते हैं क्योंकि यह जो मल्टीवर्स है उस एक एक ब्रह्मांड में मुक्ति वाली एक एक आत्माएं रहती है और उन सब के मालिक है शिव बाबा।

भक्ति मार्ग में इसीलिए गाते भी है कि
"चाहे अमीर हो चाहे गरीब हो उनको एक समान,
सबकी बिगड़ी वो ही बनाये हम सब के भगवान,
मेरे भोले के दरबार में सबका खाता है।"

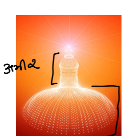

तो मीठे बाबा सभी आत्माओं को जो Reward/सुख देता है वह 100% ही मिले वैसा करते हैं (वो सुप्रीम न्याय कर्ता जो है) - इसको हम अपनी अल्पज्ञ बुद्धि चलाने से कभी भी नहीं समझ सकते हैं
इसको अगर जानना है तो सबसे पहले अपनी अल्पज्ञ बुद्धि के द्वारा भगवान के सामने तर्क करने के, सारे दरवाजे जो है उसको बंद करने पड़ेंगे ।
मीठे बाप दादा जो बुद्धि वानो की बुद्धि है वह जो कहते हैं उसको ब्लाइंड्ली फॉलो करना पड़ेगा (भगवान के सामने एक संकल्प मात्र का भी तर्क नहीं। सदैव हाँ बाबा, हाजिर बाबा, अभी बाबा - बस इतना ही -That's All) जब उनकी दृष्टि से सारे ड्रामा को देखेंगे तो सहज सब कुछ देखने में आ जाएगा।

हाँ, इसमें इतना जरूर है कि जिन आत्माओं ने इस संगम युग पर भगवान की श्रीमत पर माया को बापदादा की मदद से अपने बलबूते पर जीता है वह चारों ही युगों में सर्वश्रेष्ठ पार्ट बजाएंगे।

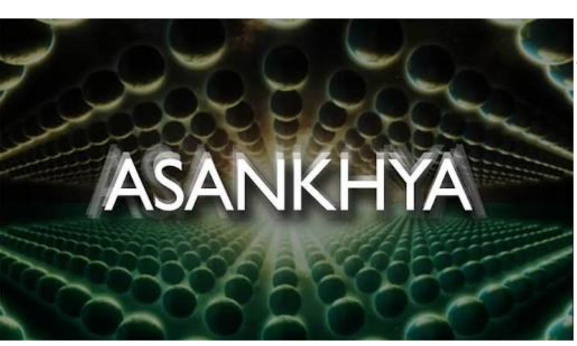

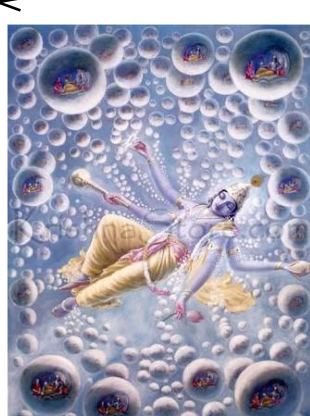

Bible - Gospel of Matthew 20:16 की कहानी

यीशु मसीह ने एक दृष्टांत (parable) सुनाया जिसे “अंगूर के बाग के मजदूरों का दृष्टांत” कहा जाता है।

कहानी

एक ज़मीन का मालिक सुबह-सुबह अपने अंगूर के बाग में काम करने के लिए मजदूरों को बुलाने गया। उसने उनसे एक दिन की मजदूरी तय की।
फिर वह दिन में कई बार बाहर गया:
सुबह 9 बजे
दोपहर 12 बजे
3 बजे
और यहाँ तक कि शाम 5 बजे भी
हर बार उसने और मजदूरों को काम पर रखा और कहा कि उन्हें उचित मजदूरी दी जाएगी।

मजदूरी देने का समय
शाम को मालिक ने सबको मजदूरी देनी शुरू की।

आश्चर्य की बात यह थी कि:
जो मजदूर केवल एक घंटा काम किए थे, उन्हें भी पूरा दिन का पैसा मिला। पूरे दिन का पैसा कैसे मिला? It is the missing link
और जिन्होंने सुबह से पूरा दिन मेहनत की थी, उन्हें भी उतना ही मिला।
↑ That is by their Efforts/मेहनत

यह देखकर पहले वाले मजदूर शिकायत करने लगे:
“हमने ज़्यादा मेहनत की, फिर भी हमें बराबर पैसा मिला!”

लेकिन मालिक ने कहा:
“मैंने तुम्हारे साथ अन्याय नहीं किया। मैंने वही दिया जो तय हुआ था। अगर मैं दूसरों पर दया और उदारता दिखाना चाहता हूँ, तो इसमें गलत क्या है?”

फिर यीशु ने कहा:
“इस प्रकार जो पीछे हैं वे पहले होंगे, और जो पहले हैं वे पीछे होंगे।” (“So the last will be first, and the first will be last.”)

इस कहानी का अर्थ
यीशु सिखाना चाहते थे कि:
परमेश्वर सब पर अपनी कृपा करता है।
परमेश्वर इंसानों की तरह ऊँच-नीच नहीं देखता।
घमंड और तुलना करना गलत है।
जो लोग दुनिया में छोटे या पीछे माने जाते हैं, परमेश्वर की नज़र में वे महान हो सकते हैं।

मुख्य शिक्षा
परमेश्वर का प्रेम और कृपा केवल मेहनत, पद या समय पर निर्भर नहीं करती, बल्कि उसकी दया और अनुग्रह पर आधारित होती है।

इस कहानी में जो बताया है की ईश्वर या परमात्मा ने सबको एक समान दिया - यह तो बिल्कुल सही है

परंतु ये सिर्फ एक ही पहलू पर बात हुई..
लेकिन इसमें जो सबसे बड़ी Missing Link है वह यह है की
जो सुबह से आए, जिन्होंने मेहनत किया(अर्थात शिव बाबा से श्रीमत लेकर उनके दिखाए गए मार्ग पर त्याग,तपस्या और पुरुषार्थ किया) और मुआवजा प्राप्त किया वह चारों युगों में हमेशा के लिए आगे रहते हैं (golden spoon in mouth) क्योंकि उन्होंने बाबा की मदद से पुरुषार्थ/मेहनत से माया पर जीत पा कर उस मुआवजे को अर्जित किया है न कि मार या रहम से..

और जो पीछे से आए हैं(अर्थात इस संगम युग पर जिन्होंको बाबा एवं बाबा की श्रीमत नहीं मिली है - जिसे मीठे बाबा मुक्ति का वर्सा कहते है) उन्होंने माया को जीता नहीं है सिर्फ इतना ही नहीं उनको तो भगवान क्या और माया क्या है वो भी पता नहीं है तो उनको सजा के बल से(जिसे बाबा कहते है "मोचरा और मानी" - मार खाकर रोटी को पाना) इक्वल मुआवजा मिलेगा

दूसरे शब्दों में, इस संगम पर पूरे कल्प के लिए श्रृष्टि की hierarchy बनती है कि कौन राजा बनेगा और कौन प्रजा..

एक और अति सूक्ष्म बात यहां रख रहे हैं इसको सिर्फ हम बाबा की याद से ही समझ सकते हैं
वह यह है की, अंत में एक्चुअल में बाबा धर्मराज के द्वारा सजा नहीं देते अपितु बाबा उस समय भी रहम दिल होके आत्मा को ऊर्जा देते हैं माया के बाकी रहे हुए चक्रव्यूह से निकलने के लिए
जिस आत्मा ने चक्रव्यूह को पार नहीं किया वह आत्मा जब धर्मराज की ऊर्जा से चक्रव्यूह से बाहर निकलती है तो उसे अति कष्ट या पीड़ा अनुभव होती है जिसको ही लोगों ने कह दिया है कि धर्मराज ने सजा दी..
परंतु वास्तव में वह सजा नहीं है, वह तो रहम ही है
पीड़ा तो इसलिए होती है क्योंकि उस आत्मा ने (बाबा की श्रीमत अनुसार) अपने पुरुषार्थ के बल से उस चक्रव्यूह को पार नहीं किया।

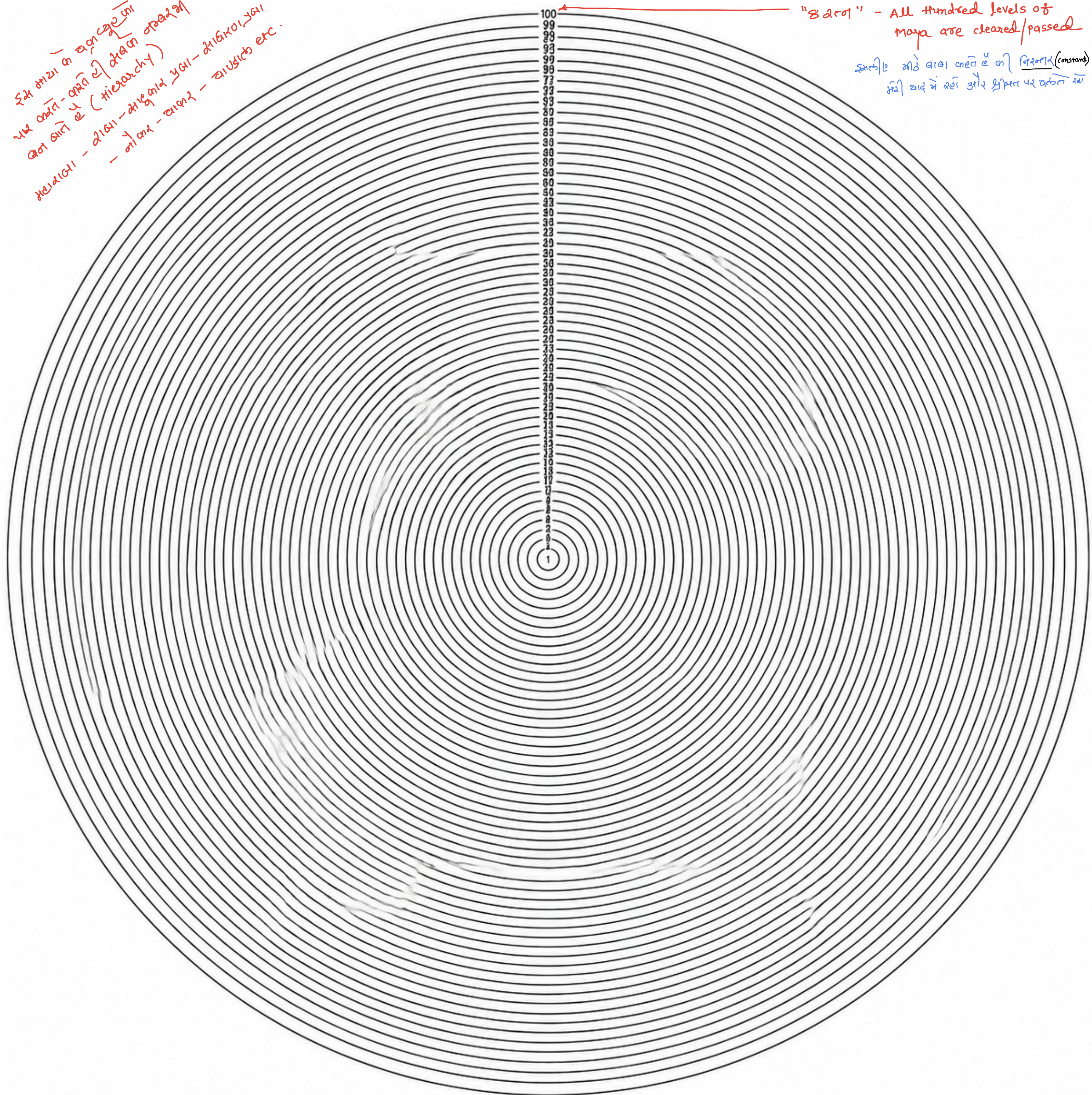

एक उदाहरण से समझते हैं

सिर्फ समझने के लिए यहां माया के चक्रव्यूह को 100 सर्कल के रूप में दिखाया हैं
जिसमें जो आत्मा इन 100 सर्कल को(बाबा की श्रीमत के आधार पर अपने पुरुषार्थ से) पार कर लेगी वह pass with honours होगी।
जिसे बाबा अष्ट रत्न कहते हैं। जिन आत्माओं को धर्मराज भी झुक कर सलाम करेगा।

अब एक उदाहरण से समझो,
जो 108 की माला के बाकी के 100 है उन्होंने 99 चक्रव्यूह को पार किया और एक चक्रव्यूह रह गया तो....
उस एक चक्रव्यूह को पार करने के लिए धर्मराज उनको ऊर्जा देगा और उस ऊर्जा से वह एक चक्रव्यूह को पार करेंगे तो जो एक चक्रव्यूह को धर्मराज की ऊर्जा से उन्होंने पार किया (यह जो सीन होगा वह कुछ ऐसा होगा जैसे कि कोई उनको उस चक्रव्यूह से घसीट कर बाहर निकाल रहा हो) तो इस कारण से उनको उस समय अत्यंत पीड़ा अनुभव होगी जिसे बाबा ने मुरली में कहा है की बाकी के जो 100 है उनको भी कुछ सटके अवश्य पड़ेंगे क्योंकि उन्होंने वो 100वा चक्रव्यूह अपने पुरुषार्थ से नहीं किंतु धर्मराज की ऊर्जा/मदद से पार किया है और वह 100वा चक्रव्यूह उन आत्माओं के लिए कल्प कल्पांतर के लिए Unknown ही रह जाएगा इसीलिए बाबा कहते हैं कि अगर अभी पुरुषार्थ नहीं किया तो कल्प कल्पांतर के लिए प्राप्ति से वंचित हो जाएंगे।

इसी प्रकार सभी आत्माओ के लिए समझ सकते हैं
जैसे किसी ने 30 चक्रव्यूह पार किए हैं तो उनको 70 चक्रव्यूह को धर्मराज की ऊर्जा की मदद से पार करना होगा(यह जो सीन होगा वह कुछ ऐसा होगा जैसे कि कोई उनको उस 70 चक्रव्यूह से घसीट कर बाहर निकाल रहा हो) जो उन्हें सजा का अनुभव कराएंगे

फिर से दोहराते है, वास्तव में बाबा धर्मराज के द्वारा यह भी रहम ही कर रहे हैं परंतु जैसे आगे बताया वैसे इस किस्सेमें चक्रव्यूह को पार करते समय एक second में अनेक वर्षों की उन्हें पीड़ा का अनुभव होगा जिसको शास्त्रों में/गरुड़ पुराण में या और और सभी धर्मों के धर्म शास्त्रोंमें धर्मराज या उन धर्मों के अनुसार जो भी नाम दिया है उनकी सजा के रूप में वर्णित करेंगे द्वापर से...

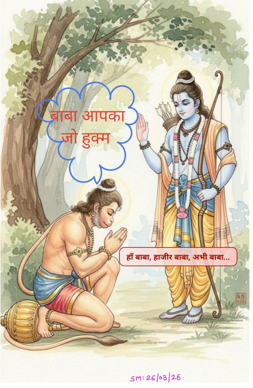

माया को कैसे जाने...?

गीता के 7वें अध्याय के 14 श्लोक में यह संपूर्ण स्पष्ट रीति बताया है कि अगर त्रिगुणी माना सतो रजो तमो गुण से निर्मित माया को जानना है तो हमें परमात्मा अर्थात शिव बाबा की शरण में संपूर्ण समर्पण होकर चलना होगा - ये एकमात्र उपाय है

कोई भी मनुष्य आत्मा को अपना आधार नहीं बनाना है।

यह बात कुछ हद तक ठीक है कि जब तक हम ज्ञान में नये होते है तो हमें निश्चय इतना पक्का नहीं होता है तो सिर्फ तब तक हम किसी के क्लास सुने या किसी से ज्ञान योग के लिए कुछ हद तक मदद ले मन मत

लेकिन अगर हमें माया को संपूर्ण रीति जानना है एवं उसके सामने विजयी होना है तो हमारा आधार सिर्फ और सिर्फ शिव बाबा, ब्रह्मा बाबा और मम्मा यह तीन ही होने चाहिए - इससे आगे कोई भी माना कोई भी नहीं

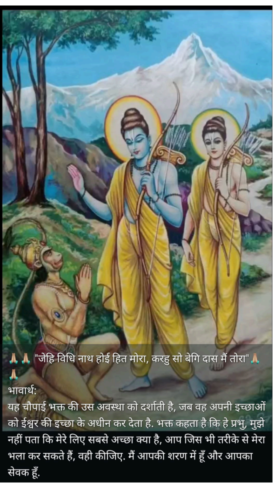

दूसरे किसी को भी क्यों फॉलो नहीं करना है।

जो भी आत्माएं हमें माया के बारे में या किसी भी ज्ञान के राज की स्पष्टता के बारे में कुछ भी समझाएंगे उसमें कुछ ना कुछ तो त्रुटि रह ही जाएगी

अब इसमें हम दो उदाहरण लेते हैं

पहला उदाहरण:

मान लो कि एक ब्राह्मण आत्मा जिसको नाम मान शान की कोई भी इच्छा नहीं है उस को 97% या 99% मालूम पड़ चुका है की माया क्या है (100% क्यों नहीं? क्योंकि अभी कोई भी संपूर्ण नहीं बना है ब्रह्मा बाबा के सिवाय)

तो अब यह आत्मा आपको अपने सच्चे दिल से निस्वार्थ भाव से आपको जो कुछ भी समझाएगी वह ऐसा होगा जैसे की मान लो कोई 12वीं कक्षा का विद्यार्थी दूसरी या तीसरी कक्षा में पढ़ने वाले विद्यार्थी को मैथमेटिक्स के 12 वीं कक्षा के Problems को समझाता हो जो कि उसने पहली कक्षा से लेकर 11वीं कक्षा तक को अपने बल बूते पर पार करके सब कुछ अर्जित करके अब 12वीं कक्षा में पहुंचा है(उसकी खुद की कमाई)

लेकिन वह दूसरी कक्षा का विद्यार्थी बेचारा उसको कैसे ग्रहण कर सकेगा क्योंकि उसकी बुद्धि वहां तक पहुंची ही नहीं है व पहुंच ही नहीं सकती

दूसरा कि वह जो अपूर्ण ब्राह्मण आत्मा हमें समझा रही है उनकी अपूर्णता भी अर्थात उनमें जो कमी कमजोरीया है वो भी हमारे अंदर unconsciously transfer होकर घर करती जाती है - फिर उसको निकालने के लिए अलग से मेहनत करनी पड़ेगी और अब हमारे पास समय है कहां....?

साथ ही जब हम उस आत्मा से सुनते हैं तो उस आत्मा की याद ना चाहते हुए भी हमको आ ही जाती है। जबकि हमारा लक्ष्य यह है कि निरंतर शिव बाबा की ही याद रहे। निरंतर का अर्थ है - सदा चलनेवाला।
Constant/ without any break or interruption

और सबसे बड़ी बात

जरा सोचो कि दूसरों को (अपूर्ण ब्राह्मण आत्मा) फॉलो करते-करते अगर यह शरीर छोड़ना पड़े तो अंत मति सो गति क्या होगी?

हमको ऐसा लगता है कि उसमें क्या है अंत में तो हम बाबा को याद करते ही शरीर छोड़ेंगे

लेकिन नहीं, "बहुत काल का अभ्यास ही अंत में काम में आयेगा एवं अंत में किसी भी देहधारी की याद ना हो सिवाय एक बाबा के" - भगवानुवाच

तो इसीलिए एक बार थोड़ा सा भी निश्चय हो जाने के बाद हमें मुरली को ही अपना आधार बनाना है

क्योंकि मुरली पढ़ते हैं तो वह मुरली है शिव बाबा और ब्रह्मा बाबा का मन और उनके मन से ही तो यह संपूर्ण ब्रह्मांड/माया क्रिएट हुई है एवं वह दोनों 100% है तो उनके द्वारा जो भी श्रीमत मिलेगी वह हमें 100% बनाएगी- रिंचक मात्र भी त्रुटि नहीं।

इसीलिए जब हम मुरली पढ़ते हैं तो हमारा मन भी बापदादा के साथ ऑटोमेटेकली ही जुड़ जाता है जिससे कि उनकी याद स्वत: ही रहती है और याद के कारण हमारे विकर्म दग्ध होते है और इसी के चलते हमारी बुद्धि की जो ग्रहण शक्ति है वह बढ़ती है एवं धारणा भी स्वत: ही होती जाती है जिसके अंतिम फल स्वरूप माया को हम संपूर्ण रीति समझ जाते हैं

100 % Advantage in All Aspects

यह तो दुनिया में भी कहते हैं कि अगर किसी दुश्मन को जीतना है तो सबसे पहले उस दुश्मन की स्ट्रैंथ और वीकनेस - इसको जानना चाहिए अर्थात दुश्मन को जानना चाहिए अगर दुश्मन को जान लिया तो उसको हराना कोई बड़ी बात नहीं।

और यह हमेशा याद रहे की जो हम खुद अपने बलबूते पर कमाते हैं वही साथ में रहता है इसीलिए मीठे बाबा कहते हैं कि अपनी घोट तो नशा चढ़े

किसी के द्वारा दिया गया कुछ भी Temporary खुशी देगा लेकिन वह अपनी कमाई नहीं है इसीलिए वह खुशी स्थाई नहीं रहेगी

दैवी ह्येषा गुणमयी मम माया दुरत्यया।
मामेव ये प्रपद्यन्ते मायामेतां तरन्ति ते॥

क्योंकि यह अलौकिक अर्थात् अति अद्भुत त्रिगुणमयी (सतो - रजो - तमो) मेरी माया बड़ी दुस्तर है; परन्तु जो पुरुष केवल मुझको ही निरन्तर भजते हैं, वे इस मायाको उल्लंघन कर जाते हैं अर्थात् संसारसे तर जाते हैं॥ १४॥ अध्याय - 7

दूसरे शब्दों में ...

मेरी दिव्य शक्ति माया, जो प्रकृति के तीन गुणों से युक्त है, पर विजय पाना अत्यंत कठिन है।
परन्तु जो मुझमें शरणागत हो जाते हैं, वे इसे आसानी से पार कर लेते हैं।

तमेव शरणं गच्छ सर्वभावेन भारत।
तत्प्रसादात्परां शान्तिं स्थानं प्राप्स्यसि शाश्वतम्॥

हे भारत! तू सब प्रकारसे उस परमेश्वरकी ही शरणमें* जा। उस परमात्माकी कृपासे ही तू परम

* लज्जा, भय, मान, बड़ाई और आसक्तिको त्यागकर एवं शरीर और संसारमें अहंता, ममतासे रहित होकर केवल एक परमात्माको ही परम आश्रय, परमगति और सर्वस्व समझना तथा अनन्यभावसे (one & only God) अतिशय श्रद्धा, भक्ति और प्रेमपूर्वक निरन्तर भगवान्के नाम, गुण, प्रभाव और स्वरूपका चिन्तन करते रहना एवं भगवान्का भजन, स्मरण रखते हुए ही उनके आज्ञानुसार कर्तव्यकर्मोंका निःस्वार्थभावसे केवल परमेश्वरके लिये आचरण करना यह 'सब प्रकारसे परमात्माके ही शरण' होना है।

* अध्याय १८ * २३९

शान्तिको तथा सनातन परमधामको प्राप्त होगा॥ ६२॥

सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज।
अहं त्वा सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः॥

२४० * श्रीमद्भगवद्गीता *

सम्पूर्ण धर्मोंको अर्थात् सम्पूर्ण कर्तव्यकर्मोंको मुझमें त्यागकर तू केवल एक मुझ सर्वशक्तिमान्, सर्वाधार परमेश्वरकी ही शरणमें[1] आ जा। मैं तुझे सम्पूर्ण पापोंसे मुक्त कर दूँगा, तू शोक मत कर॥ ६६॥ The World Almighty's Guarantee

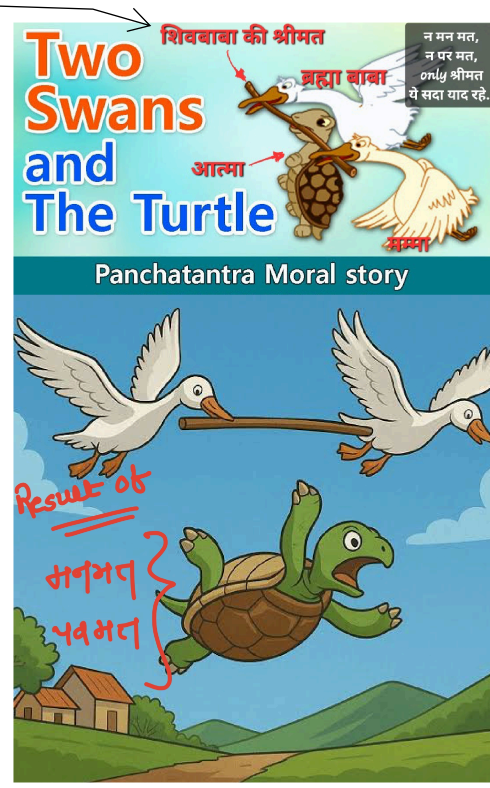

फिर पुजारी बनते हो। तो पहली बात है, बाप को याद करो। बाप को याद करने का अभ्यास करने से धारणा होगी। एक के साथ प्रीत नहीं है तो फिर और और के साथ लग जाती है। ऐसी-ऐसी

Most imp | Subtle Psychology

दूसरा उदाहरण:

आजकल यह दूसरे उदाहरण वाली कैटेगरी की आत्माये ज्यादा देखने में आती हैं जिनको ज्ञान की सच्ची गहराई क्या है वो पता ही नहीं है लेकिन नाम मान शान के चक्कर में (मुझे सब पहचाने, मेरी महिमा करें आदि आदि...) कुछ भी ज्ञान देते रहते हैं जो कि हमें बाबा से दूर करते हैं

अब सोचो कि, उनसे वो अपूर्ण देह अभियान युक्त ज्ञान हमने लिया तो उसकी result एक तो समय हमारे पास already कम है वो अमूल्य समय व्यर्थ चला गया और दूसरा कि वह अधूरा ज्ञान हमको बाबा से/लक्ष्य से ओर ही दूर ले जाएगा और इतने में ही समय समाप्त हो गया तो...? (चाहे स्वयं का शरीर छूट जाए या विनाश हो जाए - किसी भी रीति से) *Point to ponder deeply...*

दैवी ह्येषा गुणमयी मम माया दुरत्यया।
मामेव ये प्रपद्यन्ते मायामेतां तरन्ति ते॥
क्योंकि यह अलौकिक अर्थात् अति अद्भुत त्रिगुणमयी मेरी माया बड़ी दुस्तर है; परन्तु जो पुरुष केवल मुझको ही निरन्तर भजते हैं, वे इस मायाको उल्लंघन कर जाते हैं अर्थात् संसारसे तर जाते हैं॥ १४॥ अध्याय - 7

दूसरे शब्दों में ...

मेरी दिव्य शक्ति माया, जो प्रकृति के तीन गुणों से युक्त है, पर विजय पाना अत्यंत कठिन है। Impossible
परन्तु जो मुझमें शरणागत हो जाते हैं, वे इसे आसानी से पार कर लेते हैं।

संपूर्णता की मंजिल तक कौन पहुंच नहीं सकता अर्थात किसको धर्मराज के सामने सर झुकाना पड़ेगा।

जो ब्राह्मण आत्माए भगवान के सामने तर्क देती है वह आत्माए कभी भी संपूर्णता की मंजिल तक नहीं पहुंच सकती फिर चाहे उसको कल्प कल्पांतर का भी समय क्यों ना मिले। वास्तव में हमारे पास तो यह संगम युग का छोटा सा समय ही है उसमें भी 90 साल से भी ज्यादा समय तो बीत चुका है।

अपने पैरों पर कुल्हाड़ी मारना

उनमें भी वह ब्राह्मण आत्माएं जो अपनी कमी कमजोरी के कारण, अपने देह अभिमान वा अहम कार के कारण बाबा जो श्रीमत जिस संदर्भ और जिस भाव से एकदम Crystal clear कर के दे रहे है उस श्रीमत को वैसे का वैसा फॉलो नहीं कर सकती है(माया का सामना करने में अक्षम है)तो वो क्या करती है..?
उस श्रीमत को फॉलो करने के बजाय भगवान को ही, उल्टा उनके सामने, उन्होंने किसी और मुरली में, किसी और संदर्भ से, जो श्रीमत कही है उस श्रीमत का छोटा सा टुकड़ा लेकर स्वयं भगवान/महाकाल को तर्क देकर उस crystal clear श्रीमत को कट करती हैं - अपनी होशियारी/बुद्धिमानी दिखाती है और महाकाल की श्रीमत को कट करती हैं।

अब सोचो, इन आत्माओं को क्या कहेंगे और इन आत्माओं की गति क्या होगी?